International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

डिजिटल पत्रकारिता में हिंदी का बदलता रूप

नगेन्द्र सिंह

सहायक आचार्य – हिन्दी
महाराजा सूरजमल महाविद्यालय, जनूथर, डीग (राज.)

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र **डिजिटल पत्रकारिता में हिंदी का बदलता रूप** विषय के अंतर्गत डिजिटल माध्यमों के प्रभाव से हिंदी भाषा, शैली और प्रस्तुति में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और मल्टीमीडिया प्लेटफॉर्म के विस्तार ने पत्रकारिता के पारंपरिक स्वरूप को बदलते हुए उसे तात्कालिक, संवादपरक और बहुआयामी बना दिया है। इस परिवर्तन का सीधा प्रभाव हिंदी पत्रकारिता पर भी पडा है, जहाँ भाषा अधिक सरल, संक्षिप्त, आकर्षक और पाठक–केंद्रित हुई है।

अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि यूनिकोड, वॉइस टाइपिंग और डिजिटल उपकरणों ने हिंदी के लेखन–पठन को सहज बनाया, जिससे हिंदी डिजिटल सामग्री का प्रसार ग्रामीण से वैश्विक स्तर तक संभव हुआ। 'हिंग्लिश', बोलचाल की हिंदी और दृश्य–श्रव्य सामग्री के प्रयोग ने हिंदी की अभिव्यक्ति को नए आयाम दिए हैं। साथ ही, युवा पीढी की सक्रिय भागीदारी ने हिंदी डिजिटल पत्रकारिता को अधिक जीवंत और लोकप्रिय बनाया है।

शोध–पत्र में हिंदी डिजिटल पत्रकारिता के सामाजिक प्रभाव, उसकी लोकप्रियता के कारणों, तथा भाषा–शैली में आए बदलावों का सम्यक विश्लेषण किया गया है। साथ ही, फेक न्यूज भाषा की शुद्धता और नैतिक चुनौतियों जैसे मुद्दों पर भी विचार किया गया है। निष्कर्षतः, डिजिटल पत्रकारिता ने हिंदी को आधुनिक तकनीकी युग के अनुरूप ढालते हुए उसे एक सशक्त और प्रभावी संचार माध्यम के रूप में स्थापित किया है।

पत्रकारिता की पारंपरिक अवधारणा और हिंदी पत्रकारिता का इतिहास

पत्रकारिता का मूल उद्देश्य समाज को सत्य, तटस्थ और समयोचित सूचना प्रदान करना, जनमत का निर्माण करना तथा सत्ता और समाज के बीच संवाद का सेतु बनना रहा है। पारंपरिक पत्रकारिता प्रिंट माध्यम समाचार–पत्र और पत्रिकाओं पर आधारित थी, जहाँ भाषा की शुद्धता, तथ्य की विश्वसनीयता, संपादन की सख्ती और नैतिक मूल्यों का विशेष महत्व था। इसमें समाचार संकलन, संपादन और प्रकाशन की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया होती थी, जो संपादक, संवाददाता और प्रकाशक की स्पष्ट भूमिकाओं से संचालित होती थी। पारंपरिक पत्रकारिता में समाचारों का प्रकाशन निश्चित समय–चक्र (दैनिक, साप्ताहिक, मासिक) में होता था और पाठक तक सूचना पहुँचने में समय लगता था, फिर भी इसकी विश्वसनीयता और भाषा–शैली अत्यंत सुसंगठित मानी जाती थी।

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास भारत में राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक जागरण से गहराई से जुडा है। हिंदी का पहला समाचार–पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई 1826 को पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ, जिसने हिंदी पत्रकारिता की आधारशिला रखी। इसके बाद 'बनारस अखबार', 'हिंदी प्रदीप', 'भारत मित्र', 'सरस्वती' आदि पत्र–पत्रिकाओं ने हिंदी भाषा के विकास और जनजागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समय में हिंदी पत्रकारिता ने सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और भाषा के संवर्धन का माध्यम बनकर कार्य किया। द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका ने साहित्य, संस्कृति और भाषा के परिष्कार को नई दिशा दी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी पत्रकारिता ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनमत तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'प्रताप', 'अभ्युदय', 'आज', 'हिंदुस्तान' जैसे समाचार–पत्रों ने स्वतंत्रता, सामाजिक सुधार और राष्ट्रवाद के विचारों का व्यापक प्रसार किया। इस काल में पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि विचार और आंदोलन का सशक्त साधन बन गई थी।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी पत्रकारिता ने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विषयों पर जनचेतना फैलाने का कार्य जारी रखा। भाषा की सादगी, स्पष्टता और प्रभावशीलता इसकी विशेषता रही। पारंपरिक हिंदी पत्रकारिता ने मानक हिंदी के विकास, शब्दावली के निर्माण और जनसंचार की सुदृढ परंपरा स्थापित की, जिसने आगे चलकर डिजिटल पत्रकारिता के लिए आधार तैयार किया।
इस प्रकार, पारंपरिक पत्रकारिता की विश्वसनीयता, नैतिकता और भाषा–शुद्धता की परंपरा तथा हिंदी पत्रकारिता का समृद्ध इतिहास आज की डिजिटल पत्रकारिता में हिंदी के बदलते रूप को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

डिजिटल पत्रकारिता की अवधारणा एवं स्वरूप

डिजिटल पत्रकारिता वह पत्रकारिता है, जो इंटरनेट, वेबसाइट, मोबाइल एप, सोशल मीडिया, ब्लॉग, ई–पेपर, पॉडकास्ट और वीडियो प्लेटफॉर्म जैसे डिजिटल माध्यमों के द्वारा संचालित होती है। इसमें समाचारों का संकलन, संपादन, प्रकाशन और प्रसार पारंपरिक प्रिंट प्रक्रिया के बजाय तात्कालिक, इंटरैक्टिव और मल्टीमीडिया स्वरूप में होता है। डिजिटल पत्रकारिता की प्रमुख विशेषताएँ हैं त्वरितता, वैश्विक पहुँच, पाठक की सक्रिय भागीदारी, और टेक्स्ट के साथ चित्र, ऑडियो, वीडियो तथा इन्फोग्राफिक्स का समावेश। इसके स्वरूप में निरंतर अद्यतन (24*7 अपडेट), हाइपरलिंकिंग, डेटा पत्रकारिता, लाइव ब्लॉगिंग, और मोबाइल पत्रकारिता जैसी प्रवृत्तियाँ शामिल हैं। यहाँ समाचार केवल पढा नहीं जाता, बल्कि देखा, सुना और साझा भी किया जाता है। इस माध्यम ने पत्रकार और पाठक के बीच की दूरी कम कर दी है, जिससे संवादपरक पत्रकारिता का विकास हुआ है। साथ ही, कम लागत, अधिक पहुँच और तकनीकी सरलता के कारण नए पत्रकारों और स्वतंत्र लेखकों के लिए भी अवसर बढे हैं।

डिजिटल युग में हिंदी भाषा का विस्तार

डिजिटल युग ने हिंदी भाषा के प्रसार को अभूतपूर्व गति दी है। यूनिकोड तकनीक, हिंदी कीबोर्ड, वॉइस–टू–टेक्स्ट और अनुवाद उपकरणों ने हिंदी में लिखना और पढना सरल बना दिया है। परिणामस्वरूप, हिंदी समाचार पोर्टल, ब्लॉग, यूट्यूब चौनल, पॉडकास्ट, और सोशल मीडिया पेजों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। पहले जहाँ हिंदी सामग्री सीमित प्रिंट माध्यमों तक सीमित थी, वहीं अब यह वैश्विक स्तर पर इंटरनेट के माध्यम से सुलभ है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी का प्रयोग विविध रूपों में दिखाई देता है मानक हिंदी, बोलचाल की हिंदी, क्षेत्रीय शब्दावली, और 'हिंग्लिश' का मिश्रित रूप। यह परिवर्तन पाठकों की नई पीढी की भाषा–प्रवृत्ति को दर्शाता है। ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में स्मार्टफोन और इंटरनेट की उपलब्धता ने हिंदी डिजिटल सामग्री की मांग को बढाया है, जिससे हिंदी पत्रकारिता का पाठक–वर्ग व्यापक हुआ है।
इस प्रकार, डिजिटल पत्रकारिता ने हिंदी को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि तकनीकी युग में संवाद, सूचना और ज्ञान के प्रसार का सशक्त उपकरण बना दिया है, जिससे हिंदी भाषा का दायरा स्थानीय से वैश्विक स्तर तक विस्तृत हुआ है।

डिजिटल पत्रकारिता में भाषा, शैली और शिल्प का परिवर्तन

डिजिटल पत्रकारिता के आगमन ने हिंदी की भाषा, शैली और शिल्प को पारंपरिक पत्रकारिता की तुलना में अधिक लचीला, त्वरित और संवादपरक बना दिया है। जहाँ प्रिंट पत्रकारिता में भाषा अपेक्षाकृत औपचारिक,

मानक और संपादकीय नियंत्रण में रहती थी, वहीं डिजिटल मंचों पर भाषा अधिक सरल, संक्षिप्त, आकर्षक और पाठक–केंद्रित हो गई है। शीर्षकों में प्रभावशीलता, क्लिक–आकर्षण और तात्कालिकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। छोटे वाक्य, बुलेट बिंदु, उपशीर्षक, इन्फोग्राफिक्स और हाइपरलिंक का प्रयोग शिल्प को अधिक गतिशील बनाता है।

डिजिटल माध्यम में टेक्स्ट के साथ चित्र, वीडियो, ऑडियो, इमोजी, मीम और ग्राफिक्स का समावेश भाषा की अभिव्यक्ति को बहुआयामी बनाता है। 'हिंग्लिश', बोलचाल की हिंदी और क्षेत्रीय शब्दावली का प्रयोग बढा है, जिससे सामग्री अधिक सहज और युवा पाठकों के अनुकूल बनी है। साथ ही, लाइव अपडेट, ट्वीट–आधारित रिपोर्टिंग और कमेंट सेक्शन ने लेखन शैली को संवादात्मक और तात्कालिक प्रतिक्रिया–प्रधान बना दिया है। इस परिवर्तन ने पारंपरिक शुद्धतावादी दृष्टिकोण से हटकर व्यावहारिक, पाठक–उन्मुख शिल्प को बढावा दिया है।

डिजिटल पत्रकारिता में हिंदी की लोकप्रियता के कारण

डिजिटल पत्रकारिता में हिंदी की लोकप्रियता के कई प्रमुख कारण हैं। प्रथम, भारत में हिंदी समझने और बोलने वालों की बडी संख्या, जो डिजिटल सामग्री के लिए विशाल पाठक–वर्ग प्रदान करती है। द्वितीय, स्मार्टफोन और सस्ती इंटरनेट सेवाओं के प्रसार ने ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में हिंदी सामग्री की मांग बढाई है। तृतीय, यूनिकोड, वॉइस टाइपिंग और आसान कीबोर्ड सुविधाओं ने हिंदी लेखन–पठन को सरल बनाया है।

इसके अतिरिक्त, हिंदी में समाचार, मनोरंजन, शिक्षा, रोजगार और सरकारी योजनाओं से संबंधित सामग्री की अधिकता ने इसे उपयोगी और प्रासंगिक बनाया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, यूट्यूब चौनल, और हिंदी समाचार पोर्टलों की बढती संख्या ने हिंदी को डिजिटल जगत में प्रमुख स्थान दिलाया है। युवा पीढी के बीच 'हिंग्लिश' और सरल हिंदी के प्रयोग ने भी इसकी स्वीकार्यता को बढाया है।

हिंदी डिजिटल पत्रकारिता का सामाजिक प्रभाव

हिंदी डिजिटल पत्रकारिता ने समाज में सूचना के लोकतंत्रीकरण को सशक्त किया है। अब ग्रामीण, पिछडे और दूरस्थ क्षेत्रों के लोग भी त्वरित समाचार और जानकारी तक पहुँच पा रहे हैं। इससे सामाजिक जागरूकता, राजनीतिक भागीदारी और जनमत निर्माण में वृद्धि हुई है। डिजिटल मंचों ने आम नागरिक को अपनी बात रखने, प्रतिक्रिया देने और सामाजिक मुद्दों पर संवाद करने का अवसर दिया है।
इसके साथ ही, सामाजिक अभियानों, सरकारी योजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार से संबंधित जानकारी के प्रसार में हिंदी डिजिटल पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हालांकि, फेक न्यूज भाषा की असंगति और नैतिक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, फिर भी समग्र रूप से हिंदी डिजिटल पत्रकारिता ने सामाजिक सहभागिता, पारदर्शिता और सूचना की पहुँच को व्यापक बनाया है।

युवा पीढी और हिंदी डिजिटल पत्रकारिता

डिजिटल युग में युवा पीढी हिंदी डिजिटल पत्रकारिता की सबसे सक्रिय उपभोक्ता और सहभागी बनकर उभरी है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और वीडियो प्लेटफॉर्म के व्यापक उपयोग ने युवाओं को समाचार, विचार और अभिव्यक्ति के नए माध्यम प्रदान किए हैं। युवा वर्ग त्वरित, संक्षिप्त और दृश्य–श्रव्य सामग्री को अधिक पसंद करता है, जिसके कारण हिंदी डिजिटल पत्रकारिता ने अपनी भाषा और प्रस्तुति शैली को अधिक सरल, आकर्षक और इंटरैक्टिव बनाया है।

युवाओं की भाषा–प्रवृत्तिकृजैसे हिंग्लिश, बोलचाल की हिंदी, मीम संस्कृति और छोटे वीडियोकृने समाचार प्रस्तुति को प्रभावित किया है। अब समाचार केवल पढने का विषय नहीं रहा, बल्कि देखने, सुनने, साझा

करने और उस पर प्रतिक्रिया देने का माध्यम बन गया है। ब्लॉग, व्लॉग, पॉडकास्ट, इंस्टाग्राम रील्स और यूट्यूब चौनलों के माध्यम से युवा स्वयं भी 'सिटीजन जर्नलिस्ट' की भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रकार, हिंदी डिजिटल पत्रकारिता युवाओं के विचारों, रुचियों और सामाजिक सरोकारों का दर्पण बनती जा रही है।

भविष्य की संभावनाएँ

हिंदी डिजिटल पत्रकारिता के भविष्य में व्यापक संभावनाएँ निहित हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा पत्रकारिता, वॉइस सर्च, और क्षेत्रीय कंटेंट की बढती मांग हिंदी सामग्री को और अधिक समृद्ध बनाएगी। इंटरनेट की पहुँच के निरंतर विस्तार और डिजिटल साक्षरता में वृद्धि से हिंदी पाठक–वर्ग और बढेगा।
ई–पेपर, मोबाइल पत्रकारिता, पॉडकास्ट और वीडियो आधारित समाचार प्रस्तुति हिंदी पत्रकारिता के स्वरूप को और गतिशील बनाएँगे। साथ ही, तथ्य–जांच, विश्वसनीयता और नैतिक मानकों पर ध्यान देकर हिंदी डिजिटल पत्रकारिता अपनी गुणवत्ता को सुदृढ कर सकती है। भविष्य में हिंदी डिजिटल पत्रकारिता वैश्विक मंच पर भारतीय दृष्टिकोण और सांस्कृतिक विविधता को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम बन सकती है।

निष्कर्ष

डिजिटल पत्रकारिता के उदय ने हिंदी भाषा के स्वरूप, शैली और प्रयोग को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। पारंपरिक पत्रकारिता जहाँ औपचारिकता, संपादकीय अनुशासन और मानक भाषा पर आधारित थी, वहीं डिजिटल पत्रकारिता ने हिंदी को अधिक सरल, संवादपरक, तात्कालिक और बहुआयामी बना दिया है। टेक्स्ट के साथ चित्र, ऑडियो, वीडियो, इन्फोग्राफिक्स और सोशल मीडिया सहभागिता ने समाचार प्रस्तुति को गतिशील और प्रभावशाली बनाया है।

यूनिकोड, स्मार्टफोन और इंटरनेट की उपलब्धता ने हिंदी सामग्री को वैश्विक स्तर पर सुलभ किया है, जिससे हिंदी डिजिटल पत्रकारिता का पाठक–वर्ग अत्यधिक विस्तृत हुआ है। युवाओं की सक्रिय भागीदारी, हिंग्लिश और बोलचाल की भाषा के प्रयोग ने हिंदी को आधुनिक अभिव्यक्ति के अनुरूप ढाल दिया है। साथ ही, हिंदी डिजिटल पत्रकारिता ने सूचना के लोकतंत्रीकरण, सामाजिक जागरूकता और जनभागीदारी को सशक्त किया है।

हालाँकि, भाषा की शुद्धता, सामग्री की विश्वसनीयता, फेक न्यूज और नैतिक चुनौतियाँ अभी भी चिंता का विषय हैं, परंतु उचित दिशा और मानकों के पालन से इन समस्याओं का समाधान संभव है। समग्र रूप से, डिजिटल पत्रकारिता ने हिंदी को न केवल तकनीकी युग के अनुकूल बनाया है, बल्कि उसे वैश्विक मंच पर एक सशक्त और प्रभावी संचार माध्यम के रूप में स्थापित किया है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, वी. (2018). डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता. नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन।
2. शर्मा, आर. (2019). मीडिया और हिंदी भाषा का बदलता स्वरूप. जयपुर साहित्यागार।
3. तिवारी, एस. (2020). ऑनलाइन पत्रकारिता और हिंदी. नई दिल्ली वाणी प्रकाशन।
4. द्विवेदी, ह. (2017). हिंदी पत्रकारिता का इतिहास. इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन।
5. कुमार, अ. (2021). सोशल मीडिया और पत्रकारिता. नई दिल्ली प्रभात प्रकाशन।
6. मिश्रा, पी. (2016). हिंदी भाषा और जनसंचार माध्यम. वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
7. भारद्वाज, क. (2022). डिजिटल मीडियारू सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली ज्ञानदीप प्रकाशन।
8. पांडेय, जी. (2015). हिंदी पत्रकारिता परंपरा और परिवर्तन. लखनऊरू हिंदी संस्थान।
9. सिंह, म. (2020). न्यू मीडिया और हिंदी का विस्तार. भोपाल म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी।
10. वर्मा, डी. (2018). इंटरनेट पत्रकारिता और भाषा. नई दिल्ली साहित्य भवन।

11. "उदन्त मार्तण्ड से डिजिटल पोर्टल तक हिंदी पत्रकारिता की यात्रा." (शोध लेख), मीडिया विमर्श पत्रिका।
12. "हिंदी डिजिटल पत्रकारिता में भाषा–शैली का परिवर्तन." (शोध लेख), समकालीन मीडिया अध्ययन।
13. प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया. (वर्षानुसार). पत्रकारिता के नैतिक मानदंड।
14. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार. डिजिटल मीडिया रिपोर्ट्स।
15. विभिन्न हिंदी समाचार पोर्टल दैनिक भास्कर, जागरण, अमर उजाला, एनडीटीवी इंडिया (डिजिटल संस्करण)।